कोरोना की भेंट चढ़ी सांगरी

गणपतराम गर्ग
पोकरण, राजस्थान

कोरोना महामारी और उससे उत्पन्न लॉक डाउन संकट ने सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों को बुरी तरह से प्रभावित किया है। इससे एक तरफ जहां आम आदमी परेशान है वहीं उद्योग और खेती किसानी भी प्रभावित हुई है। विशेषकर छोटे शहरों की मंडियों तक पहुँचने वाले मौसमी फसल को इस महामारी की भारी कीमत चुकानी पड़ रही है। मंडियों में आवक की कमी से कालाबाज़ारी का खतरा बना हुआ है तो वहीं मज़दूरों की कमी के कारण फल और सब्ज़ियों का खेतों में ही सड़ने का खतरा भी उत्पन्न हो रहा है।

पश्चिमी राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्रों में अभी सांगरी की सीजन आई हुई है। यह इस क्षेत्र में सबसे अधिक पसंद किये जाने वाली सब्ज़ी है। इसकी महत्ता का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि मारवाड़ के क्षेत्रों में यह मेवे से अधिक महंगी बेची जाती है। पश्चिमी राजस्थान में तुलसी के नाम से प्रसिद्ध खेजड़ी के पेड़ पर मई व जून माह में सांगरी पैदा होती हैं। माना यह जाता है कि इसकी सब्जी स्वादिष्ट व निरोगी होती है। शादी विवाह के अवसर पर सांगरी के साथ केर व कुमंट के बीज जिसे स्थानीय भाषा में हलारिया कहते है, इन तीनों को मिलाकर सब्ज़ी बनाई जाती है। बड़े बड़े शहरों और होटलों में इसकी बहुत अधिक मांग होती है। खाने के मेन्यू में यह सबसे महंगी सब्ज़ी होती है।

इस क्षेत्र की महिलाएं ताजा सांगरी तोड़कर इसे पानी में उबालकर सूखा देती हैं। जिसके बाद इसे साल भर संरक्षित रखा जा सकता है। घर के खास मौकों पर ही इसकी सब्ज़ी बनाई जाती है। लेकिन इस बार लोग अपनी मनपसंद सब्ज़ी का स्वाद नहीं चख पा रहे हैं। लॉक डाउन के कारण इसे खेतों से तोड़ा नहीं जा पा रहा। जिससे इसके सड़ने का खतरा हो गया है। दरअसल मध्य अप्रैल से मध्य मई के दरम्यान

ही इसे तोड़ना आवश्यक होता है। जिसके बाद इसे बाजार में हाथों हाथ पहुंचा दिया जाता है। कई बार बड़े व्यापारी मंडी में पहुँचने से पहले ही इसे सीधे खेतों से ही खरीद लेते हैं। लेकिन लॉक डाउन के कारण इस बार इसका खेतों से इसका टूटना और मंडियों के माध्यम से लोगों की प्लेट तक पहुँचने की इस पूरी प्रक्रिया पर ग्रहण लग गया है। यानि इस बार सांगरी की सब्जी भी कोविड-19 की भेंट चढ़ गई है।